



तथ्यों पर आधारित कल्पना (परिकल्पना)

डा. शीतल कुमारी

परिकल्पना का मतलब किसी अस्थायी विचार इतिहास से होता है जिसके गुणागुण अभि सुनिश्चित नहीं हो पाये हैं।

किसी भी ऐतिहासिक अनुसंधान का उद्देश्य कुछ प्रश्नों का उत्तर देना होता है वास्तविक अध्यन आरंभ करने के पहले शोधकर्ता अनुमान लगाता है कि अध्यन के बाद किसी तरह का परिणाम मिलेगा। साधारण अर्थ में इसी अनुमान को परिकल्पना कहते हैं।

वास्तव में वैज्ञानिक शोध का आरंभ समस्या के साथ-साथ परिकल्पना से होता है। शोध की संस्था

समस्या को एक याएक से अधिक परिकल्पनाओं में बदल दिया जाता है फिर अनुभाविक अध्यन के आधार पर इसकी जाँच की जाती है सही प्रमाणित होने पर उसे स्वीकार कर लिया जाता है और गलत प्रमाणित होने अस्वीकार कर दिया जाता है। सरल शब्दों में कुछ इस तरह भी समझा जा सकता है मान लेते हैं एक शोधकर्ता अपने अध्यन में रूढ़िवाद पर शैक्षिक स्तर का प्रभाव देखना चाहता है वास्तविक

अहध्यन के पूर्व ही वह एक अनुमान लगाता है कि कम शिक्षित लोगों की अपेक्षा अधिक शिक्षित लोगों में रूढ़िवादिता कम पायी जाती है।

भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने परिकल्पना की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। करलिंगर के अनुसार "परिकल्पना दो या दो अधिक चरों के बीच संबंध अनुमानात्मक कथन है।"

इसी तरह रेबर-रेबर के अनुसार :- "परिकल्पना वह कथन, प्रस्ताव या अभिकरन है जो कुछ तथ्यों की अंतरि व्याख्या का काम करती है।"

जबकि गुड तथा हैट के अनुसार :- "परिकल्पना / इस बात का वर्णन करती है कि हम क्या देखना चाहते हैं। वह भविष्य की ओर देखती है यह एकसा तर्कपूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जाती है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी।"

उपरोक्त परिभाषाओं के अध्यन के द्वारा ये कहा जा सकता है परिकल्पना किसी सम्भावना का एक

अनुमानित समाधान है जिसकी वैधता का सत्यापन किया जाना शेष है।

परिकल्पना का निर्माण ये भी एक महत्वपूर्ण तथ्य है उल्लेखनीय है कि परिकल्पना पूरी तरह

काल्पनिक नहीं होती है। परिकल्पना का कोई ठोस आधार होता है जबकि कल्पना का कोई ठोस आधार

नहीं होता है।

जैसे कि --सावन-भादो में आकाश में काले-काले बादल देखकर यह अनुमान लगाना कि "आज वर्षा होगी परिकल्पना है क्योंकि इसके आछार हमारे पूर्वानुभव है लेकिन यह अनुमान लगाना कि "आज रात ताजमहल आगरा से हटकर पटना में स्थापित हो जाएगे" ये हमारी कल्पना है क्योंकि ये कथन पूर्व अनुभव पर आधारित नहीं है।

परिकल्पना को बनाने के लिए कुछ ठोस आधारों को होना आवश्यक है।

इस सदर्भ में निम्नलिखित स्तोत अधिक महत्वपूर्ण है

1. व्यक्तिगत अनुभव

2. पहले के शोध

3. शोध सार

4. शोध पत्रिकाएँ

5. संगत पुस्तके

6. संगत सिंद्धान्त

7. अनुरूपता

8. सांस्कृतिक घटक विश्लेषण

9. व्यक्तिगत रूचि एवं सार्थक

10. ज्ञान में रिक्ति

11. विरोधी परिणाम

12. विशेषज्ञ के विचार एवं निर्देश

इन स्तोत के आधार पर परिकल्पना के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं-

परिकल्पना के प्रकार

(1) सार्वभौमिक

(2) अस्तिवात्मक

(3) कथन के स्वरूप के अधार पर

साकारात्मक कथन

नकारात्मक कंपन

(4) शुन्य परिकल्पन

बढ़ाने में सहायता मिलता है निम्नलिखित बिटुओं

द्वारा परिकल्पना का महत्व स्पष्ट होता है-

1. परिकल्पना शोध मार्ग के लिए मार्ग दर्शन करती है।

2. परिकल्पना अनुसंधान क्षेत्र को सीमित करती है।

3. परिकल्पना पुनरावृति अथवा पुनः परीक्षण

द्वारा मूल्यांकन अनुसंधान के परिणाम की सत्यता का करने में सहायक होती है।

4. परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को एक निष्कर्ष पर पहुंचने में सहायक होती है।

5. परिकल्पना प्रत्ययों के निर्माण में सहायक होती है।

मध्य संबंध स्थापित करने में

6. ऑक्डो के मध्य सहायता।

परिकल्पना के लिए आवश्यक है कि उसका स्वरूप वैज्ञानिक हो। वैज्ञानिक परिकल्पना को अच्छी परिकल्पना कहते हैं। मैक्गूगन, करलिंगर आदि मनोवैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक परिकल्पना या अच्छी परिकल्पना की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है।

1. परिकल्पना को अनुमानात्मक कथन होना चाहिए

करलिंगर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि परिकल्पना प्रश्न के रूप में नहीं होती बल्कि कथन

के रूप में होती है जैसे कि “धूम्रपान करने से कैंसर होता है, वृत्तिथा सर्जनात्मक के बीच

धनात्मक सहसंबंध होता है आदि अनुमानात्मक कथन अच्छी परिकल्पना के उदाहरण है।

2. परिकल्पना को सकारात्मक कथन होना चाहिए:- एक अच्छी परिकल्पना सकारात्मक कथन के रूप में होती है नकारात्मक कथन के रूप में नहीं

यहाँ दो या दो से अधिक चरों के बीच संबंध को स्वीकार किया जाता है अस्वीकार नहीं किया जाता है। अतः शोधकर्ता को ऐसी परिकल्पना का निर्माण

करना चाहिए जिसमें दो से अधिक या दो चरों के

संबंध को स्वीकार किया गया है।

4. परिकल्पना को समस्या से सम्बंध होना चाहिए:- मैकगूगन ने कहा है "परिकल्पना को समस्या का सांगत उत्तर होना चाहिए।" यह ज्ञात तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए तथा इसकी जड़े ज्ञान के वर्तमान सिद्धांतों को निहित होनी चाहिए। अच्छी परिकल्पना वास्तव शोध- समस्या में का कामचलाऊ उत्तर ही होता है ।

4. परिकल्पना को अल्पव्ययी होना चाहिए:- किसी समस्या तथा से सबंधित अल्पव्ययी अपिव्ययी परिकल्पनाएँ उपलब्ध हो तो अल्पव्ययी परिकल्पना को ही श्रेष्ठ समझना चाहिए। अल्पव्ययी परिकल्पना का अर्थ वह परिकल्पना है जो स्पष्ट हो, सरल हो, कम खर्च और सीमांकित हो।

5. परिकल्पना में तार्किक सरलता होनी चाहिए:- तार्किक सरलता का तात्पर्य तार्किक एकता तथा सम्भागता से है। कोई परिकल्पना केवल समस्या तक ही सीमित हो तो समझना चाहिए कि उसमें तार्किक एकता तथा शोध सम्भागता उपलब्ध है। यदि कोई परिकल्पना समस्या के अलावा अन्य बातों को समहित करता है तो समझना चाहिए कि जिसमें तार्किक सरलता के गुण उपलब्ध नहीं हैं।

6. परिकल्पना को परीक्षणीय चाहिए:- मैकगूगन ने यह कहा है कि अच्छी परिकल्पना वह है जिसका परीक्षण वर्तन में करना संभव हो और घटिया परिकल्पना वह है जिसमें परीक्षणीयता की केवल संभावना हो। इसका अर्थ है कि परिकल्पना ऐसी हो जिसकी जाँच अनुभविक अध्यन के आधार पर करना संभव हो। और जिसके परीक्षण के लिए यंत्र प्राप्त हो सके।

7. परिकल्पना को स्वीकृति या अस्वीकृति के अधिन होना चाहिए:- एक वैज्ञानिक परिकल्पना ऐसी होती है कि वह स्वीकृत या अस्वीकृत प्रमाणित हो सके जबकि अनुभविक अध्यन के बाद या तो वह स्वीकृत हो जाती है या अस्वीकृत हो जाती है, तीसरा कोई विकल्प नहीं होती है।

8. परिकल्पना को परिमाणनीय होना चाहिए:- परिमाणन का अर्थ यह है कि परिकल्पना के दोनों चरों के बीच का संबंध मात्रात्क अध्यन संभव हो परिकल्पना ऐसी होनी चाहिए कि उससे सबंधित आंकड़े सरलता से प्राप्त हो सके। मैकगूगन ने भी परिकल्पना की इस सिविलियत पर बल दिया है और कहा है कि परिकल्पना को परिमाणन किया हुआ

होना चाहिए। अथवा इस योग्य होना चाहिए कि उसका परिमाणन आसानी से हो सके।

एक अच्छी परिकल्पना में परिमाणन के गुण होने ही चाहिए।

9. परिकल्पना में अधिक संख्या में परिणाम होने चाहिए:- परिकल्पना ऐसी हो जिससे पूर्व स्थापित तथ्यों की व्याख्या हो सके। और ऐसी घटनाओं के

संबंध में भविष्यवाणी की जा सके, जिसका अध्यन अब तक नहीं हो सका हो। अथवा जो अप्रमाणित हो, मैकगूगन ने भी इस विचार का सर्वथन किया है।

10. परिकल्पना को समान्यतः दूसरी परिकल्पनाओं से संगत होना चाहिए:- मूक गूगन के अनुसार यद्यपि यह विशेषता वैज्ञानिक परिकल्पनाओं के लिए

अनिवार्य नहीं है फिर भी इस विशेषता के उपलब्ध होने पर परिकल्पनाओं में समान्यता की मात्रा बढ़ जाती है और नहीं होने पर इसकी मात्रा काफी घर

जाती है। परिकल्पना तार्किक रूप से पुष्ट तथा शोध समस्याओं से धनिष्ठ रूप से संबंधित होनी चाहिए।

11. परिकल्पना किसी को अध्ययन विधि के अनुकूल होना चाहिए :-परिकल्पना ऐसी हो जो किसी निर्धारित अध्यन विधि के अनुकूल हो अर्थात् जिसकी जाँच उपलब्ध अध्यन विधि, उपकरण तथा परीक्षण के आधार पर संभव हो।

12. परिकल्पना को किसी स्थापित सिद्धांत से संबंध हो:- यदी एक परिकल्पना का किसी स्थापित सिद्धांत सो हो दूसरे परिकल्पना का नहीं हो तो ऐसी स्थिति में पहली परिकल्पना श्रेष्ठकर होगी।" जैसे- "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत

बन जाता है। यह परिकल्पना थार्नडाइक के सिद्धांत से संबंध होने के कारण एक अच्छी परिकल्पना है- "परिणाम के ज्ञान से निष्पादन उन्नत बन जाता है।"

13. परिकल्पना को भविष्यवाणी करने में सर्वथ होना चाहिए:- परिकल्पना ऐसी हो जिसके आधार पर एक भविष्य में होने वाली घटनाओं के संबंध में

पूर्वकथन किया जा सके। जैसे कि "धूम्रपान से कैसर होता है।" इस परिकल्पना के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है जो धूम्रपान करेगा उसे यह रोग हो जाएगा।

इस प्रकार एक अच्छी परिकल्पना या वैज्ञानिक परिकल्पना की उपर्युक्त कई कसौटियों या विशेषताएं

हैं।

अतः किसी एक परिकल्पना में अधिक से अधिक विशेषताएँ जितनी अधिक संख्या में उपलब्ध होते हैं उसे उतना ही अधिक वैज्ञानिक परिकल्पना मानी जाएगी।

वास्तव में शोध कार्य में परिकल्पनाओं का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है ये शोध के लिए अनेक कार्य करते हैं जैसे कि-

1. दिशा प्रदान करना।
2. अस्थायी समाधान
3. शोध कार्य हेतु प्रेरणा देना।
4. तथ्यों के चयन में सहायता।
5. समान्यीकरण के लिए आधार पद्रान करना।
6. नवीन शोध हेतु प्रोत्साहन देना।

सीधे शब्दों में कहा जा सकता है कि परिकल्पना शोध कार्य को ताकत देती है शोध में उत्साह भर देती है और आशान्वित भी करती है।

10. आमतौर पर वैज्ञानिक परिकल्पनाये गणितीयस माडल के रूप में प्रस्तृत की जाती है जो परिकल्पनाये अच्छी तरह परखने के बाद सुस्थापित हो जाती है उनको सिद्धांत कहा जाता है।

- 1) सोशल रिसर्च एण्ड मैथंड- - सुनील गोयल, सुनीता गोयल
- 2) रिसर्च मैथड इन सोशल साइंस-पी. के मजूमदार
- 3) शोध पद्धति - सी.आर कोढारी
- 4) रिसर्च मैथडलाजी इन हिन्दी-गयंत राम